



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
इतिहास	110	हिन्दी
पुस्तिका का क्रमांक	0181072	
अंकों में	परीक्षार्थी का रोल नम्बर	
273199008		
शब्दों में	दो सात तीन एक नौ नौ मुख्य मुख्य आठ	

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

उदाहरणार्थ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ	

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष द्वारा भरा जावे

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में	<input checked="" type="checkbox"/>	शब्दों में	<input checked="" type="checkbox"/>
ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक	09		
ग - परीक्षा का दिनांक	11 03 2017		
परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा			
हायर सेकण्ड्री परीक्षा		C.N. 311082	
पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर		
<i>Sunita Sharma</i>	<i>Prabha</i>		

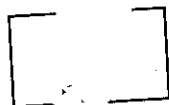
परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।	
निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।	
उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
	<i>Prabha</i>
	Dr. PRABHA SINGH Vahristha Adhyapak G.H.S.S. Renhat V. No.- 141110016 Mob.- 09479878504

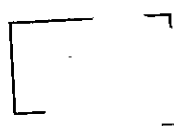
केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।		
प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	(अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में

2



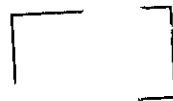
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ एक

=



दुः क



प्रश्न क्र.

उ०क्र०-१

- (i) हयेंमशांग ।
- (ii) लीधल ।
- (iii) कुकुवधीन टैबका
- (iv) 1885
- (v) कालीकर ।

उ०क्र०-२

- B
- (i) सत्य ।
 - (ii) सत्य ।
 - (iii) सत्या
 - (iv) असत्य ।
 - (v) असत्या

उ०क्र०-३

- (i) बिम्बिसार → हर्यक वंश
- (ii) बलबन → शक एवं लौह की नीती
- (iii) जीजा बाई → शिवाजी की माता
- (iv) महात्मा गांधी → पंग इण्डिया
- (v) लार्ड कर्जन → बंगाल विभाजन

उ०क्र०-४

- (i) चन्द्र गुप्त मौर्य ।

3

[]

+

[]

=

[]

यो षष्ठ

षष्ठ अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

- (ii) सन 1191 ई।
- (iii) शैरशाह सूरी।
- (iv) सूरत।
- (v) चर्बी वाले कारतूस।

उ०क्र०-5

- (अ) (iii) फुलकेरिज द्वितीय।
- (ब) (ii) इब्राहिम लोदी।
- (स) (i) 1757 ई।
- (द) भारत छोड़ो आन्दोलन।
- (इ) (iv) ~~स~~ झांसी।

उ०क्र०-6

पुरापाषाण के काल के औजार पत्थर के थे।
और यह बेजेल खुदरे भीड़ी दार थे।

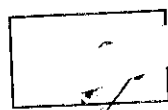
उ०क्र०-7

वेद संस्कृत के विधि धातु से बना है। इसका अर्थ
होता है, ज्ञान प्राप्त करना।

उ०क्र०-8

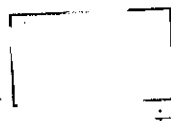
वेद चार प्रकार के होते हैं।
(i) सामवेद (ii) अथर्ववेद
(iii) ऋग्वेद (iv) यजुर्वेद।

4



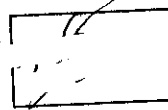
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ - अंक

=



कुल अंक



उ० क्र०-८

राजपूत काल में जीहूर प्रथा चर्म सीमा पर पद्युच्य पुरे थे। इसमें जब युद्ध क्षेत्र में जीत की ~~लेखनी~~ सम्भावना न रहने पर राजपूत सैनिकों की स्त्रियाँ सतिल को बचाने के लिए वे अपने को अग्नि में भस्म कर लेती थी।

उ० क्र०-९

तजमहल का निर्माण शाहजहाँ ने अपनी बली सुमताल महल की याद में सन् 1632 में आगरा में करवाया था।

उ० क्र०-१०

- (i) प्लासी के युद्ध में दो अंग्रेजों को वैर रखने की जगह मिली लेकिन बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों का अधिकार अर्द्ध तरह हो गया तथा उनके वैर जम गये। अर्द्धी
- (ii) प्लासी के युद्ध में तो अंग्रेजों को बंगाल पर विजय मिली थी। लेकिन बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों का अधिकार बंगाल, उड़ीसा, बिहार पर अधिकार हो गया था।
- प्लासी का युद्ध 1757 तथा बक्सर का युद्ध 1764 में हुआ था।

7



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 7 के अंक

=



कुल अंक



सं क्र.

के सैनिक बन्द थे। जिसमें से एक शत्रुबिहारी बौस थे।
 सुभाषचन्द्र बौस ने सन् 1943 में आजाद हिन्द फौज
 की स्थापना की थी। तथा उन्होंने प्रण किया था
 की मैं अन्तिम साँस तक युद्ध करूँगा और पवित्र
 इस युद्ध की कसम जब तक देश आजाद नहीं
 हो जायेगा, तब तक निरंतर युद्ध करता रहूँगा और
 अपने प्राणों को न्यो दावर कर दूँगा। इन्होंने
 सेन्गापुर में शाहीद और सौराज्य की स्थापना की।
 एक वायुयान की दुर्घटना के कारण उनकी मृत्यु
 सन् 1945 में हो गई।

B
S
E

उ०क्र०-६

नव पाषाण काल कि विशेषताएँ निम्न लिखित हैं -

- (i) औजार → नवपाषाण काल में पुरापाषाण काल, एवं मध्यपाषाण काल के औजारों से अन्वेषण औजार बनाने लगे थे। नवपाषाण काल में औजार, सुजोल, चिकने, पालीस धार, बने लगे थे। इसमें हसियल, गण्डासा, तीरकमान आदि प्रसूत थे।
- (ii) पहिये का आविष्कार - इस काल में पहिये का आविष्कार हो गया था। तथा पहिये के सहायता से चाकू का निर्माण हो गया था। चाकू की सहायता से इस काल में वर्तनी का निर्माण हो गया था।
- (iii) पशुपालन - इस काल के लोग पशुपालने लगे थे। इसमें गाय, बैल, भैंस, बकरी, आदि थे। पशुओं से प्राप्त दूध, घी प्राप्त होने

10

$$\boxed{7} + \boxed{10} = \boxed{17}$$

योग पू. 18 20 10 क अंक कुल अंक



प्रश्न क्र.

उ०क्र०-18

- (i) मराठा के उदय के निम्न चार कारण -
 प्राकृतिक दसा - मराठों के युद्ध के समय महाराष्ट्र के प्राकृतिक दसा ऐसी थी कि मुगल सेना और मराठी सेना आमने सामने युद्ध नहीं कर सकते थे। तथा मराठों ने दायामार रणनीति अपनाई। और मुगलों की सेना अचानक दायामार करके उन्हें पराजित कर देते थे। जिसके कारण उनका उत्साह बढ़ता गया।
- (ii) धार्मिक जागरूकता - इसमें धर्म का राज करने के लिए एक दसा, एक नाथ, हमेन्द्री, बामन पण्डित आदि थे। इन्होंने मराठों में धर्म की भावना उत्पन्न की। तथा एकता का निर्देश दिया।
- (iii) हिन्दुत्व का प्रभाव - शिवाजी ने महाराष्ट्र के हिन्दुओं में हिन्दुत्व की भावना जागृत की। और उन्हें एकत्रित करके मुगलों पर आक्रमण करने को उत्साहित किया।
- (iv) शिवाजी का त्यक्तित्व - शिवाजी एक वीर योद्धा एवं निर्भीक युद्धा थे। कुशल राजनीतिज्ञ एवं सेनानायक थे। इन्होंने हिन्दुओं को युद्ध: ऊपर की ओर उठाया है। तथा इन्होंने अत्यन्त साहस से मुगलों का सामना किया और इन्होंने मराठों को एकत्रित करके मुगलों पर विजय प्राप्त की।

B
S
E

RD/SEC/ND/ARY/EDUCATION/MADHYA PRADESH/BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 12 के अंक कुल अंक



प्रश्न क्र.

(iii)

किसानों को अच्छी एवं अधिक पैदावार होने लगी थी। तथा फिर भी जमीनदार उनसे अधिक से अधिक कर मूल्य लेते थे। जिससे किसान निरर्थक एवं उनकी दसा सोचनीय हो गई थी।

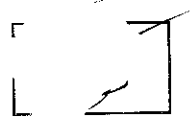
(iv)

किसानों पर सरकार का शूद्या समुर्पक नहीं था। तथा वे जमीनदारों पर जोर देते थे। तथा जमीनदार किसानों से दो गुना अधिक कर वसूली करते थे। तथा किसानों की दसा अत्यधिक दयनीय हो गई थी।

B
S
E

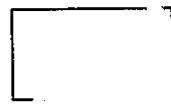
उत्तर-2।

मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम में विशेष योगदान रहा है। अंग्रेज शासकों ने रानी अवंतीबाई के पती विक्रमादित्य को मठ के घाट उतार दिया। उस समय रानी अवंतीबाई का पुत्र होता था। अंग्रेजों ने मण्डला जिले के रामगढ़ के राज्य की देखभाल के लिए एक से अंग्रेजी अधिकारी को नियुक्त किया। रानी अवंतीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध शुरू दिया। राज्य के अंग्रेजों से निको को मोतके घाट उतार दिया जिससे अंग्रेज शासक भग्न गये। और रानी अवंतीबाई से युद्ध करने को तैयार हो गये। रानी अवंतीबाई ने रानी से अंग्रेजों से निको का दमन किया और विभिन्न जगहों से सैनिक



एक पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 1

=



कुल एक



सं क्र.

एकत्रित करके अंग्रेजों का सामना किया। रानी अवन्तीबाई ने पुनः अपने राज्य पर अधिकार कर लिया। जब रानी अवन्तीबाई ने महल में थी तभी अचानक अंग्रेज सैनिकों ने महल को घेर लिया। अवन्तीबाई ने देखा तो वे महल के पीछे दरवाजे से जंगल की ओर चली गई। अंग्रेजी सैनिकों ने उनका पीछा किया। रानी अवन्तीबाई दौड़ी सी सेना ने अंग्रेजों की विशाल सेना से निरन्तर युद्ध किया लेकिन वे पराजित हुए। यह स्थिति देखकर रानी अवन्तीबाई ने देखा तो अपनी अंगरक्षिका मिथारीबाई की कमर से कटार खींचकर अपने को मातृभूमि समर्पण कर दिया। यह देखकर ही उनकी रक्षिका ने भी उनकी अपने को मातृभूमि को समर्पण कर दिया।

उ०क्र०-२२

- अशोक के धर्म की निम्नलिखित विशेषताएँ थी।
- (i) सम भौतिक धर्म - अशोक ने ऐसे धर्म को अपनाया जो धर्म सभी जातियों समस्त सम्प्रदायों के लोभ अपना अतिथि अपनाते थे।
 - (ii) अहिंसा - अशोक ने अहिंसा पर विशेष ध्यान दिया। वह अपने धर्म में हिंसा को कोई स्थान नहीं देता था। वह सभी को एक समान एवं सभी को संरक्षण देता था।
 - (iii) स्वम्भ शिव - अशोक ने धर्म के प्रचार के लिए अनेक स्वम्भ एवं शिलालेखों निर्माण किये।

14

7

यहाँ 7 पृष्ठ

+

7

पृष्ठ 14 के अंक

=

14

कुल अंक



(iv) धर्म महा मंत्रों की नियुक्ति - अशोक ने धर्म की एवं राज्य की देखरेख के लिए धर्म महा मंत्रों की नियुक्ति की। जिससे जनता को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो।

(v) राजकीय संरक्षण - अशोक ने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। तथा वह सभी धर्मों को सम्मान देता था। उसके राज्य में सभी व्यक्ति स्वतंत्र थे। तथा वे सभी धर्म का पालन करते थे।

उ०क्र०-२३

(i) विजयनगर के निम्न लिखित कारण थे।
अथौठ्य उत्तराधिकारी - विजयनगर में कृष्ण देव राय की मृत्यु के बाद नौ भी शासक बना वह अथौठ्य हुआ तथा वे आपस में लड़कर बिरवर जाते थे। तथा विदेशी आक्रमणों का सामना ना कर सके इसलिए इसका पतन हो गया।

(ii) हिन्दुओं द्वारा मुसलमानी बगड़ों में हस्तक्षेप - विजयनगर के वासी आपस में ही लड़ते रहते थे। तथा वे एक-दूसरे को नीचा दिवाने को मँचते थे। इस कारण से इस इन्में एकता का अभाव था। जिससे इस नगर का पतन हो गया।

B
S
E

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

सोम पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 16 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

2- तिकवा का विश्वमंदिर - तिगावा का विश्वमंदिर सतना जिले में स्थित है। इसका भू-गर्त 8 फुट गहरा है। इसके दाये और बाएँ का चित्र तथा ऊपर और नीचे का चित्र है।

3- रायसेन - रायसेन मुख्यालय से 25 किलोमीटर साँची का स्तूप में स्थित है। इसमें तीन मुख्य स्तूप हैं। एक विशाल एवं दो लघु स्तूप हैं।

1- गौतम बुद्ध का वर्णन।

2- अशोक के धर्म के विचारकों का वर्णन।

3- गौतम बुद्ध के दो शिष्यों का वर्णन।

इसका विस्तार सिन्धु काल में हुआ था।

गौतम बुद्ध की घटनाओं का वर्णन है।

4- खजुराहो का मंदिर - खजुराहो मंदिर का निर्माण चंद्रेल शासकों ने करवाया था।

इसका मुख्य मंदिर कंदरिया महादेव।

वहाँ की कलाकृति आकर्षक है। इसमें

अन्दर बाहर पशु-पक्षियों एवं देवी-देवता के चित्र हैं।

5- धरकूत का स्तूप - इसका विस्तार

सिन्धु काल में हुआ था। इसमें तीन

मुख्य स्तूप हैं। दक्षिणा पश्चिम है। तथा इसके

चारों तरफ चार दरवाजे हैं। इसका कोई

चित्र अंकित नहीं है।

17

$$\left[\begin{array}{c} \text{पृ.} \\ \text{योग पू. पृ.} \end{array} \right] + \left[\begin{array}{c} \text{पृ.} \\ \text{कुल अ.} \end{array} \right] = \left[\begin{array}{c} \text{कुल अ.} \end{array} \right]$$



प्रश्न क्र.

उत्क्रो-25

राष्ट्रीय युग: जागरण से समाज में निम्न लिखित प्रभाव पड़ा -

- (1) समाजित नीतियों का अन्त हुआ। इसमें जातिवाद भेदभाव समाप्त हो गया। सभी लोग एक समान रहने लगे। तथा अपने धर्म से जगत्क दुये।
- (2) अस्य प्रस्वता का अन्त - इस जागरण में उन्होंने अनेक गाथाओं का अर्थ प्रारम्भ हुआ। इसमें सभी लोग एक-दूसरे की मदद करने लगे। तथा उनके बीच भेद-भाव समाप्त हो गया। इसमें सामान्य की भावना उत्पन्न हुई। तथा यातायात में व्यवस्था हुई। तथा यातायात में कौ भी ~~समाप्त~~ समाप्त हुई। जिससे उसमें रहनेवाली सभी खुश हो गये।